पाठ 5 - रॉबर्ट नर्सिंग होम में

लेखक - कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

अतिथि - मेहमान

परिचारक - रोगी की सेवा करने वाला

आतिथेया - मेजबान (अतिथि का सत्कार करने वाली)

आघात - हमला, चोट

विशिष्ट - विशेष

पैतालीस बसंत देखना - पैतालीस वर्ष की उम्र

धवल - सफेद

आच्छादित - ढकी हुई

हिम श्वेत - बर्फ के समान सफेद

अरुणोदय - सूर्योदय

अनुरंजित - रंगी हुई

सुता - सधा - छरहरा

अधिनायक - तानाशाह

शिकंजा - जखड़ने या कसने वाला

तरुणाई - युवावस्था

तल्लीन - तन्मय/ निमग्न

म्लान - मुरझाया हुआ/ फीका

कपोल - गाल

चांदनी चर्चित - चांदनी की आभा वाले

धाम - ठिकाना

राग - लगाव

चाव - शौक

अधरों - होंठों

अभिभूत - डूबकर

प्रसव - बच्चे को जन्म देना

हँसी बिखेरना - खुशी देना

गौर - गोरा

दैवीय - अलौकिक

दुहिता - बेटी

ध्येय - उद्देश्य

दर्प - गर्व

दीप्त - दमकती

स्टेच्यू - मूर्ति

नश्तर - धारदार औजार (जैसे चाकू, उस्तरा आदि)

पद दलित - पैरों से कुचला, रौंदा

चारों खाने दे मारना - पराजित कर देना

फौलादी - लोहे की तरह मजबूत

नगण्य - जो गिनने लायक न हो (यहाँ मामूली)

व्रत - संकल्प; निश्चय

नम - भीगा

फटी आँखों से - हैरानी से / आश्चर्य

असह्य- जिसे सहा न जा सके

कूजे की मिसरी - सांचे वाली मिसरी

सौम्य - शालीन

उत्सर्ग - त्याग / बलिदान

कामरूप - असम का प्राचीन नाम

रसलीन - आनंद में डूबी

विह्वल - बेचैन

चीत्कार - पीड़ा से चीखना

झेप - लाज, शर्म, संकोच, शर्माना

गर्त - गहराई (गड्ढा)

उत्फुल्ल - खिली हुई/ प्रसन्न

लक्ष्यदर्शी - उद्देश्यपूर्ण

सेवानिरत - सेवा में लगा हुआ

कर्पूरिका - कपूर जैसी गौरी देह वाली

सौरभ - सुगंध / खुशबू

निस्संग - तटस्थ, अलग

मानस - चक्षु - मन के नेत्र

कृतार्थ - धन्य